



NEERAJ®

यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू (1789-1945)

(Some Aspects of European History-1789-1945)

B.H.I.E.-145

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Harmeet Kaur



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com

Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू (1789–1945) (Some Aspects of European History-1789-1945)

Question Paper–June–2024 (Solved)	1
Question Paper–December–2023 (Solved)	1
Question Paper–June–2023 (Solved)	1
Question Paper–December–2022 (Solved)	1
Question Paper Exam Held in July 2022 (Solved)	1-2

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	आधुनिक राज्य और राजनैतिक संस्कृति	1
	(The Modern State and Political Culture)	
2.	जनता की क्रांतिकारी कार्रवाई	11
	(Radical Action by the Masses)	
3.	आधुनिक फ्रांसीसी राज्य की स्थापना	21
	(Formation of Modern French State)	
4.	बौद्धिक प्रवृत्तियाँ	30
	(Intellectual Trends)	
5.	यूरोपीय राजनीतिक लामबंदियाँ	39
	(European Political Mobilizations)	
6.	नई राजनीतिक व्यवस्थाएँ	49
	(New Political Systems)	
7.	औद्योगीकरण 1750–1850	58
	(Industrialization 1750-1850)	
8.	औद्योगीकरण 1851–1914	68
	(Industrialization 1851-1914)	

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
9.	राष्ट्रवाद और राष्ट्र-राज्य (Nationalism and the Nation State)	80
10.	उदारवादी जनतंत्र (Liberal Democracy)	93
11.	समाजवादी विश्व (The Socialist World)	103
12.	उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद (Colonialism and Imperialism)	117
13.	फासीवाद और नाजीवाद का उत्थान (Rise of Fascism and Nazism)	126
14.	दो विश्व युद्ध (Two World Wars)	142



**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू (1789-1945) **B.H.I.E.-145**
(Some Aspects of European History-1789-1945)

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-I

प्रश्न 1. 1789 की फ्रांस की क्रांति के लिए उत्तरदायी कारणों की संक्षिप्त में चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-3, पृष्ठ-21, 'निरंकुश राज्य और सामंती ढाँचे का उन्मूलन', पृष्ठ-23, प्रश्न 1

प्रश्न 2. प्रबोधन (Enlightenment) विचारकों पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-4, पृष्ठ-33, प्रश्न 2

प्रश्न 3. रूसी औद्योगीकरण के गेरशेनक्रोन मॉडल का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-74, प्रश्न 5

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) सीक्रेट सोसाइटी (Secret Society) आन्दोलन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-5, पृष्ठ-39, 'गुप्त संगठन आंदोलन'

(ख) बिस्मार्कवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-6, पृष्ठ-50, 'बिस्मार्कवाद'

(ग) जॉल्वेरिन

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-8, पृष्ठ-69, 'जॉल्वेरिन', पृष्ठ-73, प्रश्न 3

(घ) प्रजातंत्र में राजनीतिक दलों की भूमिका

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-1, पृष्ठ-7, प्रश्न 6

भाग-II

प्रश्न 5. जर्मनी में वैंमर गणतंत्र तथा उदारवादी प्रजातंत्र का वर्णन कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-10, पृष्ठ-93, 'वाईमर गणतंत्र और उदारवादी जनतंत्र'

प्रश्न 6. साम्राज्यवाद के विभिन्न सिद्धांतों का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-12, पृष्ठ-116, 'साम्राज्यवाद के सिद्धांत'

प्रश्न 7. रूस की नवीन आर्थिक नीति (NEP) की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-11, पृष्ठ-110, प्रश्न 5

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-9, पृष्ठ-84, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद : चरण (क) और (ख)'

(ख) शीत युद्ध

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-14, पृष्ठ-146, प्रश्न 5

(ग) फासीवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-126, 'फासीवाद के सामान्य लक्षण'

(घ) नाजीवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें-अध्याय-13, पृष्ठ-128, 'जर्मनी में नाजीवादी का गठन'



QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू (1789-1945) **B.H.I.E.-145**
(Some Aspects of European History-1789-1945)

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड - I

प्रश्न 1. आधुनिक यूरोपीय राज्यों की प्रकृति तथा उसकी नौकरशाही के महत्त्वपूर्ण लक्षणों की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'प्रत्यक्ष शासन एवं नौकरशाही'

प्रश्न 2. उपयोगितावाद और स्वतंत्र व्यापार के सिद्धांत के विशेष संदर्भ में उदारवाद का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-31, 'उदारवाद'

प्रश्न 3. किस प्रकार इंग्लैंड प्रथम औद्योगिक राष्ट्र बना?

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-7, पृष्ठ-58, 'ब्रिटेन में औद्योगीकरण'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) बोनापार्टवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-6, पृष्ठ-50, 'बोनापार्टवाद'

(ख) प्रारम्भिक समाजवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-32, 'समाजवाद'

(ग) रूसो

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-34, 'रूसो'

(घ) कॉन्कॉर्दात (धर्म संधि)

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, 'धार्मिक विभाजन एवं धर्म संधि'

खण्ड - II

प्रश्न 5. वैमर गणतंत्र पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-97, प्रश्न 3

प्रश्न 6. उपनिवेशवाद की विभिन्न अवस्थाओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-12, पृष्ठ-119, 'उपनिवेशवाद के चरण'

प्रश्न 7. यूरोप में फासीवादी राज्यों की प्रकृति का परीक्षण कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-127, 'फासीवादी राज्य की प्रकृति', 'यूरोप के विभिन्न देशों में फासीवाद'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए-

(क) इतालवी राष्ट्रवाद

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-83, 'इतालवी राष्ट्रवाद और जन लामबंदी'

(ख) 1920 के दशक का आर्थिक संकट

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-10, पृष्ठ-95, 'आर्थिक संकट'

(ग) विश्व युद्धों के प्रभाव

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-14, पृष्ठ-145, प्रश्न 4

(घ) रूस में शुद्धीकरण (Purges)

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-115, प्रश्न 1



Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू (1789-1945)

(Some Aspects of European History-1789-1945)

आधुनिक राज्य और राजनैतिक संस्कृति (The Modern State and Political Culture)

1

परिचय

आधुनिक यूरोपीय राज्यों में सत्ता का स्वरूप निरपेक्ष और लामबंदी माना गया है। पूर्ण सत्ता से आशय असीम शक्तियों और प्रत्येक क्षेत्र पर राज्य अधिकार से है। यूरोपीय राज्यों की कार्य करने की क्षमता को अत्यंत ही सीमित रखा गया क्योंकि राज्यों द्वारा की गई कार्रवाई का अर्थ प्रदर्शन तथा इसका उद्देश्य जनता को प्रभावित करना था। इन राज्यों की कार्रवाई के क्षेत्रों में सिर्फ सैन्य, वित्तीय, युद्ध और कर लगाने वाले क्षेत्रों को शामिल किया गया। आधुनिक यूरोपीय राज्य की कार्य दक्षता में विभिन्न कारणों को शामिल किया गया, जैसे-वैध बल प्रयोग पर एकाधिकारी प्रत्यक्ष शासन, राज्य द्वारा जनता पर सांस्कृतिक एकरूपता थोपना तथा जनता के लिए राज्य के दावे की लोकतांत्रिकता को बैध ठहराना।

अध्याय का विहंगावलोकन

प्रत्यक्ष शासन एवं नौकरशाही

माना गया है कि 15वीं शताब्दी के बाद यूरोपीय राजाओं के प्रत्यक्ष शासन द्वारा संपूर्ण सत्ता को केंद्रित किया गया। इसके लिए उनके द्वारा शाही अधिकारियों और निम्न दर्जों के कुलीन वर्ग की नियुक्तियों की गईं। यहीं से आधुनिक नौकरशाही का प्रारंभ हुआ। पंद्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक प्रमुख राज्य निर्माताओं में शामिल थे-रूस के इवान चतुर्थ (भयावह), पीटर प्रथम (महान), फ्रेडरिक विलियम और फ्रेडरिक द्वितीय (प्रथा के), फ्रांस के कार्डिनल रिशालू, लुई चौदहवां और इंग्लैंड के हेनरी अष्टम तथा टॉमस क्रॉमवेल।

नौकरशाही के अंतर्गत अधिकारियों की प्रशासनिक व्यवस्था संबंधी मुख्य विशेषताएँ थीं-वेतनभोगी, अधिकारियों के दिशा-निर्देश का पालन करना और निचले स्तर के अधिकारियों को आदेश देना, कानूनी नियमों का पालन करना आदि। चुनाव के आधार योग्यता/ नौकरशाही के इस आदर्श रूप तथा कार्य करने के इस तरीके को तार्किक वैधानिक (रैशनल-लीगल) कहा गया। मैक्स वेबर द्वारा

इस व्यवस्था को आधिकारिक रूप से इसी प्रकार वर्णित किया गया है।

नौकरशाही द्वारा सरकार से आदर्श कार्यों को करने की उम्मीद की जाती है। हालांकि आदर्श शासन के कार्य भिन्न हो सकते हैं। किसी शासन में रिश्तखोर व भ्रष्टाचार के होने से वह आदर्श शासन नहीं कहा जा सकता, परंतु आधुनिक समय से पहले नौकरशाही के ये कारक सामान्य माने जाते थे। प्रत्येक प्रशासन को ऐसे ही मानदंडों के आधार पर आँका जाता है। इन्हीं मानदंडों का पैमाना दो सौ वर्षों पूर्व यूरोप में और बाद में संपूर्ण विश्व में स्वीकार किया गया। इसे हम आधुनिक की जगह पारंपरिक भी मान सकते हैं।

तार्किक-वैधानिक रूप में ही नौकरशाही द्वारा आधुनिक राज्य को शक्तिशाली, विश्वसनीय, अनुकूल प्रतिक्रिया देने वाला बनाया गया है। एक निर्णायक के तौर पर आदर्श गुणों में विशेषता, अवैयक्तता, नियमों के अनुसार कार्रवाई, कठोर पदानुक्रम और सरल स्थानापन्नता जैसे गुणों के कारण नौकरशाही को सटीक निर्णय करना संभव हुआ।

पूर्व आधुनिक काल के शासकों के कार्य प्रभावहीन माने गये हैं क्योंकि उनके द्वारा सत्ता का प्रदर्शन नाटकीय ढंग से किया जाता था, जैसे कि व्यक्तिगत समृद्धि के अंतर्गत पहनावा, रहन-सहन, शिष्टाचार नियम, ताजपोशी, दान दक्षिणा देना, अपराधियों को क्षमादान और असाधारण हिंसा व्यवहार; परंतु आधुनिक नौकरशाही द्वारा यह प्रदर्शनकारी कार्य महान् राष्ट्रीय पवों पर ही किये जाते थे।

पूर्व आधुनिक काल में नौकरशाहियों द्वारा समस्याओं का पूर्वानुमान लगाकर उनका समाधान करने की क्षमता देखी गई है और सटीक निर्णय द्वारा कार्रवाई कर सकते थे, परंतु आधुनिक राज्य प्रणाली निरंकुश है, इसलिए लोकतांत्रिक सिद्धांतों के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं और विशेष परिस्थितियों में व्याख्या अनिवार्य मानी जाती है।

पूर्व आधुनिक राज्य धनी और शक्तिशाली लोगों पर कार्यकलाप करते और जनता पर कर लगाते, परंतु आधुनिक राज्य में प्रत्येक क्षेत्र पर कार्यकलाप किया जाता है। आधुनिक राज्यों में नागरिकों की गतिविधियों पर नजर रखी जाती थी, ताकि वह पूर्वानुमान लगा सकें। आधुनिक राज्यों द्वारा प्रत्येक पहलू पर नियंत्रण करना शुरू

किया गया है, जैसे कि औद्योगिक, सामाजिक, व्यावसायिक विवाद या गरीबों, बूढ़ों, बच्चों आदि के सामाजिक कल्याण की सेवाएँ इत्यादि।

पूर्व आधुनिक राज्य में सेनाओं की संख्या काफी मात्रा में सम्पन्न थी। फ्रांसीसी क्रांति में राष्ट्रीय भर्ती में शारीरिक रूप से संपूर्ण समर्थ नागरिकों को सेना में भर्ती किया गया, परंतु आधुनिक राज्यों में 20वीं शताब्दी से सैनिकों की संख्या में काफी इजाफा हुआ था, अत्यधिक यानी यह संख्या लाखों से ऊपर थी। पूर्व आधुनिक राज्य में युद्ध या अभियान हेतु सैनिकों को रखा जाता, इनमें ज्यादातर किसान तथा सैनिक होते थे, परंतु आधुनिक राज्यों द्वारा स्थायी सेना रखने की स्थायी परंपरा का प्रारंभ हुआ।

पूर्व आधुनिक राज्यों में शस्त्र प्रौद्योगिकी का अत्यंत सीमित रूप था। घुड़सवार और पैदल सेना तैयार की जाती थी, परंतु आधुनिक राज्यों में शस्त्र प्रौद्योगिकी का व्यापक रूप देखा गया। इसके अंतर्गत टैंक, हवाई बमबारी और अन्य प्रकार के नवाचार देखने को मिले। इसमें युद्ध, छापामार युद्ध, विद्रोह के भिन्न-भिन्न रूप सामने आये। बीसवीं शताब्दी में क्रांतिकारी विद्रोह का व्यापक रूप देखने को मिला, जिससे राज्य खंडित हुए और राज्यों में आपसी युद्ध शुरू हुए, जैसे कि चीनी क्रांतिकारी संघर्ष, रूसी गृहयुद्ध और अमेरिकी गृहयुद्ध।

राष्ट्रवाद एवं राष्ट्र राज्य

आधुनिक यूरोपीय राज्यों में राष्ट्र और राष्ट्रवाद का उदय हुआ। राज्य के प्रत्येक नागरिक का एक ही संस्कृति से संबंधित होना राज्य की क्षमता को बढ़ाता है, जबकि खंडित राज्यों में सत्ता भी खंडित होती है। सामंतवाद के अंतर्गत निरंकुश शासनवाद द्वारा इस स्थिति को नियंत्रित किया गया। एकल राज्य द्वारा सकल जन के निर्माण हेतु नागरिकों को शामिल किया गया, समाज में समानता का सिद्धांत और अन्य सिद्धांतों को अपनाया गया।

वहीं, शिक्षा को समरूपता का आधार माना गया। आधुनिक राज्यों द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा को अनिवार्य घोषित किया गया। इसके अंतर्गत मूल्यों और एक भाषा को बढ़ावा दिया गया। आधुनिक यूरोपीय राज्य द्वारा एक ही संस्कृति का उत्पाद किया गया। एक सत्ता केंद्र से शासित होने वाले राज्य को 'राष्ट्र' कहा गया। विशेष क्षेत्र में रहने वाले, समान संस्कृति के बोध को 'राष्ट्रवाद' के रूप में जाना गया, जिसके अंतर्गत कई प्रकार के राष्ट्रों का उदय हुआ। राष्ट्र राज्यों के रूप में इंग्लैंड में कॉर्नवाल, स्कॉटलैंड में हाईलैंड्स को देखा गया। अंग्रेजी भाषा को इन देशों द्वारा मान्यता दी गई, जैसे कि फ्रांस में फ्रांसीसी, इटली में इतालवी। कहने का तात्पर्य यह है कि क्षेत्रों के आधार पर उनकी अपनी भाषाएँ बोली जाती हैं।

प्रत्येक राज्य द्वारा राष्ट्रवाद को प्रयोजित किया गया। रूसी और आस्ट्रो हंगरी जैसे राज्यों द्वारा बहुराष्ट्रीय राज्य होने के कारण

राष्ट्रवाद को बढ़ावा नहीं मिला। प्रत्येक राष्ट्र में अपनी राष्ट्रीय भाषा को बढ़ावा दिया जाने लगा। हालांकि यह माना गया है कि क्षेत्रीय राष्ट्रवाद के विकसित होने से पहले ही इस प्रक्रिया को शुरू किया गया, प्रत्येक राज्य अपना अस्तित्व चाहता है।

यूरोप में विभिन्न राष्ट्र राज्यों का उद्भव हुआ, इसलिए यूरोप में आधुनिक राजनीति का अर्थ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के रूप में माना जाने लगा। राज्यों द्वारा वैध बल प्रयोग के एकाधिकार का प्रयोग किया जाता था। प्रत्येक राज्य किसी बाहरी सत्ता का हस्तक्षेप नहीं चाहता था। हालांकि यह राज्य कानून की दृष्टि से सम्पन्न और प्रभुत्व सम्पन्न माने जाते थे, परंतु संसाधनों के मामले में एक-दूसरे से भिन्न माने जाते थे। इन राज्यों में भौतिक संसाधनों और सत्ता के लिए पदानुक्रम शुरू किये गये, जिनका आधार राज्य था। राज्यों द्वारा व्यापक कूटनीति अपनाई गई। प्रत्येक राज्य राष्ट्रीय हितों को प्रोत्साहित करना चाहता था, उनकी रक्षा करना चाहता था, इसलिए राष्ट्रीय हितों हेतु राजनीतिक विचारधारा सामने आई। इन विचारधाराओं के अंतर्गत 1648 की वेस्टफोलिया की संधि द्वारा एक नई व्यवस्था की स्थापना की गई।

लोकतांत्रिक राज्यतंत्र

आधुनिक राज्यों के हाथ में सत्ता होते हुए भी राष्ट्र की राजनीति लोकतांत्रिक थी क्योंकि आधुनिक राज्य लोगों की इच्छा का प्रतिनिधित्व करते थे, इसलिए ये राज्य लोकतांत्रिक माने गये। आधुनिक राज्यों के उदय का कारण अठारहवीं शताब्दी के अंतिम रूप में विभिन्न देशों में होने वाली क्रांतिकारी घटनाओं को माना गया। आधुनिक यूरोपीय राज्यों में लोगों की इच्छाओं का प्रतिनिधित्व किया गया। यह प्रक्रिया उत्तर-पश्चिमी यूरोप के उदारवादी लोकतांत्रिक राज्यों और पूर्वी यूरोप तथा सोवियत संघ के समाजवादी राज्यों पर भी लागू हुई।

लोकतांत्रिक राजनीति में शासक का रूप जनता को माना गया, परंतु प्रत्यक्ष तौर पर शासन जनता द्वारा नहीं, अपितु सार्वजनिक पदों पर बैठे अन्य लोगों द्वारा किया जाता था, परंतु आधुनिक राज्यों में लाखों की संख्या में नागरिक थे। इसलिए नागरिकों द्वारा प्रतिनिधि चुने जाते हैं और प्रतिनिधियों द्वारा शासकों का चुनाव होता है। यह आधुनिक लोकतांत्रिक संविधान का आदर्श रूप है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत जनता द्वारा अपने अधिकार चुने हुए सदस्यों को दिए जाते हैं। ये प्रतिनिधि दूसरे दल या दूसरी विचारधाराओं के होते थे। इसलिए चुनाव अवधि तक यह दृष्टिकोण और दल शासक के बदलाव में लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग माने जाते हैं। हालांकि, इसमें जनता की विशेष भूमिका नहीं होती, परंतु फिर भी यह निर्णय जनता द्वारा लिया जाता है और जनता के कार्य और व्यवहार को जनता का विचार बताकर उचित ठहराया जाता है। इस प्रकार गुप्त मतदान और निष्पक्ष चुनावी प्रक्रिया द्वारा लोकतांत्रिक

राजनीति का दृष्टिकोण सुनिश्चित किया गया। इस लोकतांत्रिक राजनीति के आदर्श रूप को समाजवादियों और अनुदारवादियों द्वारा स्वीकृति दी गई, परंतु अराजकतावादी, फ्रांसीसी और राष्ट्रीय समाजवादियों द्वारा अस्वीकृति ही दी गई।

क्रांतिकारियों और प्रति-क्रांतिकारियों द्वारा भी बाद में उदारवादी लोकतांत्रिक राजनीति का रुख अपनाया गया। उनके द्वारा भी जनता के समर्थन को चुनावी प्रक्रिया द्वारा अपनी शक्ति और वैधता का स्रोत माना गया। हालांकि उनके द्वारा चुनाव प्रक्रिया का कुछ मानदंडों के अनुसार आयोजन किया जाता है। जनता का समर्थन उन्हें कितना मिला, इस बात का अंदाजा स्वतंत्र रूप से लगाया जा सकता है कि उन्हें विशेष क्षणों में जनता का समर्थन प्राप्त नहीं था, परंतु चुनावी प्रक्रिया के माध्यम से ही लोकप्रियता के प्रदर्शन की आकांक्षा की गई थी।

लोकतांत्रिक माध्यमों द्वारा तानाशाही को थोपा जाता रहा, जैसे कि लुई नेपोलियन द्वारा फ्रांस में 1851 में जनमत चुनाव प्रक्रिया द्वारा स्वयं को सम्राट घोषित कर, लोकतांत्रिक आधार पर आदेश जारी करवा दिये गये और शासन किया गया। अन्य सम्राट जैसे कि हिटलर द्वारा 1932 में जर्मनी का चांसलर बनकर स्वयं के लिए तानाशाही अधिकारों को प्राप्त किया गया। इसी प्रकार, सोवियत संघ का बोल्शेविक शासन। 1936-1938 के स्टालिन के शुद्धिकरण द्वारा चुनावों का भयंकर दौर भी देखने को मिला।

इस प्रक्रिया में लोग आनुवंशिक आधार पर भी सम्राट बने, जैसे कि फ्रांस का नेपोलियन तृतीय। इस प्रकार की सत्ता राज्यों के हाथ में केंद्रित थी। राज्य के अधिकारों के लोकतांत्रिक होने के साथ-साथ नौकरशाहीकरण की प्रक्रिया द्वारा निरंकुश शासन के अधिकार और बढ़ गये क्योंकि जनता के हितों को बढ़ावा देने के कारण सत्ता राज्य के पास थी, इसलिए राज्यों द्वारा जनता को लामबंद किया जा सकता था।

हालांकि, आधुनिक लोकतांत्रिक राज्य के सर्वशक्तिशाली साधन सशस्त्र बल, अर्धसैनिक बल, पुलिस और नौकरशाही रहे, परंतु फिर भी लोकतांत्रिक होने का प्रदर्शन नहीं किया गया। संपूर्ण कानूनी व्यवस्था और न्यायपालिका इसी प्रकार का प्रमुख साधन रही। न्यायपालिका द्वारा कानून से विवादों का निर्णय और कानून पारित करते समय कानूनी विवेचना की जाती थी। न्यायपालिका द्वारा व्यक्तियों और राज्य के मामलों को सुलझाया जाता था। न्यायाधीश द्वारा राज्य के विरुद्ध व्यक्तियों के पक्ष में भी निर्णय किया जा सकता था। इस प्रकार एक स्वतंत्र न्यायपालिका को लोकतंत्र के लिए अनिवार्य माना गया।

न्यायपालिका के न्यायिक समीक्षा के अधिकार के कारण भी न्यायपालिका को लोकतंत्र के लिए आवश्यक माना गया। हालांकि न्यायिक समीक्षा की शक्ति अमेरिका में स्थापित हुई, परंतु यूरोप के

विभिन्न देशों में न्यायिक समीक्षा की शक्ति की प्रक्रिया अलग-अलग देखी गई। एक स्वतंत्र न्यायपालिका के हाथों लोकतंत्र की शक्ति को सीमित किये जाने का सिद्धांत प्रत्येक बहुलवादी उदारवादी लोकतंत्र पर लागू होता है। इसे शक्तियों के विभाजन का सिद्धांत भी कहा जा सकता है। लोकतांत्रिक प्रक्रिया को लोकतंत्र की रक्षा करने के लिए पर्याप्त नहीं माना गया।

इस तरह आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति का यह आदर्श रूप नहीं माना गया क्योंकि जनता का शासन न करना, न्यायिक समीक्षा का कार्य प्रतिनिधियों के हाथ में होना, नौकरशाही और सैनिक तंत्र द्वारा शक्तियों का प्रयोग आदि एक आदर्श लोकतंत्र नहीं माना जा सकता, परंतु फिर भी चुनावी राजनीति और नौकरशाही निरंकुशता को आदर्श लोकतंत्र माना गया है। इस प्रकार जनता द्वारा स्वयं शासन करने के बजाए अन्य प्रक्रियाओं द्वारा भागीदारी दर्शायी जाती है।

आधुनिक राजनीति की क्रांतिकारी घटनाओं के कारण राजनैतिक दलों का सृजन हुआ। यह दल नौकरशाही या दरबार में रहने वाले गुटों के साथ ऐसे संगठन बन चुके थे, जो कि विशेष विचारधारा रखते थे। यह दृष्टिकोण किसी वर्ग, समूह, क्षेत्र धर्म या राष्ट्रों के हित से संबंधित हो सकते थे। इन दलों द्वारा जनता के साथ वैचारिक समर्थन बनाया गया, जैसे कि नागरिकों को मताधिकार, श्रमिक संगठन का सदस्य, याचिका पर हस्ताक्षर, जुलूस यानी प्रदर्शन में भाग लेना आदि विभिन्न गतिविधियाँ। उपर्युक्त नए प्रयासों द्वारा राजनीति दल स्थापित किये गये। उनके द्वारा जनता से की जाने वाली माँगों में जनता को लामबंद करने की प्रक्रिया द्वारा राजनीति को लोकतांत्रिक बनाया गया। जनता द्वारा शासकों के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रदर्शित किया जा सकता है, इसलिए इन दलों द्वारा शासकों का चुनाव होता। इस प्रकार नागरिक दल के साथ एक भागीदारी जनता लामबंदी के साधन के रूप में सामने आयी। इस तरह आधुनिक जनता पर नौकरशाही की निरंकुशता का और पार्टी की लामबंदी का अधिकार माना गया है। हालांकि, नागरिकों के अधिकार का आधार शासन का वैध होना और जनता के समर्थन हेतु राजनीतिक दलों की लामबंदी को माना गया। नागरिक अधिकारों को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मानव अधिकार का नाम दिया गया, जिसके अंतर्गत राजनीतिक प्रक्रियाएँ उन अधिकारों का प्रयोग करती हैं, जो कि प्रत्येक के लिए समान माने जाते हैं। राजनीतिक दलों का असक्षम होना नए संगठनों का सृजन करता है।

नागरिक कार्यवाही समूहों का उद्देश्य सत्ता के अलावा और भी हो सकता है, जैसे कि पीड़ित व्यक्ति की रक्षा करना, पर्यावरण की सुरक्षा, उपभोक्ताओं के अधिकारों का समर्थन तथा उनके हितों की रक्षा करना। यह हित व्यापारिक या श्रमिक भी हो सकता है। बहुत सारी व्यक्तियों की ओर से राजनीतिक कार्यवाही का रूप जनहित

माना गया। आधुनिक राजनीति का अर्थ नौकरशाही, ऊपर से लामबंदी और नीचे नागरिकों के बीच सक्रिय रहने वाला तनाव माना जा सकता है।

आधुनिक राजनीति की एक अन्य विशेषता में वाम, मध्य और दक्षिणपंथी राजनैतिक विचारधाराएँ और राजनीतिक दल आते हैं, जो वामपंथी विचारधाराओं से प्रतिबद्ध माने जाते हैं तथा इनमें समाजवाद और साम्यवाद आते हैं। मध्य वर्ग परिवर्तन की प्रक्रिया को स्वीकृति के साथ धीमा करता है। इसलिए इनके अंतर्गत उदारवादी आंदोलन और विचारधारा महत्वपूर्ण है, जो कि तर्क से समाजवादी मानी गई है। दक्षिणपंथी राजनीतिक विचारधाराएँ परंपरा में सुधार, परिवर्तन को प्रदर्शित करती हैं। अनुदारवादी दक्षिण पंथ के अंतर्गत आते हैं। उनके द्वारा 1815 तक फ्रांसीसी क्रांति के परिवर्तनों को स्वीकारा गया, परंतु 1848 की क्रांतियों के बाद उन परिवर्तनों को भी स्वीकारा गया, जिनसे क्रांति को बाधित करना था। अधिकांश वामपंथी मध्य मार्ग का समर्थन करते हैं। दक्षिण पंथ के अतिवादी दृष्टिकोण को प्रति-क्रांति भी कहा गया। इस क्रांति का दृष्टिकोण क्रांति के मूल विचार को रद्द करना माना गया। उनके द्वारा आधुनिक काल की क्रांतियाँ पैदा हुईं। प्रत्येक दृष्टिकोण पर प्रहार किया गया। बीसवीं शताब्दी के सर्वोत्तम प्रतीक फासीवाद और राष्ट्रीय समाजवाद माने गये। यूरोपीय गृहयुद्ध वामपंथ से सोवियत संघ के नेतृत्व से, मध्य में मित्र राष्ट्रों के नेतृत्व में तथा दक्षिणपंथ की ओर से संधि देशों के नेतृत्व में लड़ा गया। 1945 के बाद वामपंथ तथा मध्य मार्ग के मध्य में शीत युद्ध में बदल गया और 1991 में सोवियत संघ और साम्यवादी खंडित होने के कारण उत्तर-आधुनिक काल में मध्य मार्ग का नियंत्रण बरकरार रहा।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. नौकरशाही की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

उत्तर—नौकरशाही छोटे या बड़े पदानुक्रमानुसार अधिकारियों का प्रशासनिक व्यवस्था में शामिल होना है। नौकरशाही की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. **अधिकारी वर्ग का वेतनभोगी होना**—नौकरशाही में अधिकारी वर्ग का वेतनभोगी होना पहली विशेषता मानी गयी है क्योंकि अधिकारी पेशेवर होते हैं, इसलिए प्रशासनिक व्यवस्था में उनका खुद का व्यक्तिगत निर्णय नहीं होता। यह नौकरशाही के क्रम में आदर्श विशेषता मानी गई है।

2. **वरिष्ठ अधिकारियों के आदेशों का पालन करना**—नौकरशाही की दूसरी विशेषता अपने बड़े अधिकारियों के आदेशों का पालन करना मानी गयी क्योंकि नौकरशाही में अधिकारी प्रशासनिक व्यवस्था को सुचारु ढंग से चलाने के लिए निम्न स्तर से शीर्ष स्तर तक पाए जाते हैं। इसलिए इसमें वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिये गये दिशा-निर्देशों का पालन किया जाता है।

3. **अपने निम्न अधिकारियों को आदेश देना**—नौकरशाही की अन्यतम विशेषता में शामिल है, अपने से छोटे अधिकारियों को आदेश देना। प्रशासनिक व्यवस्था एक क्रम के अनुसार चलती है और इसमें किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अधिकारियों को प्रशासनिक ढाँचे के अंतर्गत आदेश दिये जाते हैं और वह उनका पालन करते हैं।

4. **कानून द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार कार्य करना**—नौकरशाही के अंतर्गत अधिकारी अपनी पसंद के अनुसार नहीं, बल्कि कानून द्वारा बनाए गये नियमों के अनुसार कार्य करते हैं। उनके द्वारा सामूहिक नियमों के अनुसार भी कार्य किये जाते हैं। इस प्रकार कानूनी नियमों के अनुसार कार्य करना, नौकरशाही की अन्य विशेषता को दर्शाता है।

5. **अनुकूल प्रतिक्रिया देने वाला साधन**—नौकरशाही को अनुकूल प्रतिक्रिया देने वाला साधन माना गया है क्योंकि नौकरशाही द्वारा आधुनिक राज्य इतने प्रभावशाली और शक्तिशाली बन जाते हैं कि किसी भी अन्य साधन की अपेक्षा नौकरशाही को अधिक अनुकूल प्रतिक्रिया देने वाला साधन माना गया है, जो किसी भी क्षेत्र में प्रवेश कर सकता है। नौकरशाही के विभिन्न गुणों में विश्वसनीयता एक अन्य गुण माना गया है।

6. **सटीक निर्णय**—नौकरशाही की अन्य विशेषता में सटीक निर्णय को माना गया है। नौकरशाही में अवैयक्तता, विशेषज्ञता, नियमों के अनुसार कार्यवाई, कठोर प्रक्रिया और आसान स्थानापन्न जैसे गुणों के कारण इसे सटीक और पुर्वानुमानित नतीजों वाले निर्णय करने वाला मानते हैं।

7. **नौकरशाही का आधार योग्यता आधारित होना**—नौकरशाही की एक प्रभावशाली विशेषता योग्यता को माना गया है। यह माना गया है कि जिन अधिकारियों के पास विशेष योग्यता नहीं होती, वह प्रभावी ढंग से प्रशासनिक कार्यों को नहीं कर सकते। हालांकि, नौकरशाही के अंतर्गत चुनाव अधिकारियों की व्यक्तिगत व पारिवारिक विशेष योग्यता को आधार माना जाता है। इसलिए एक अधिकारी के बाद दूसरे अधिकारी का उसी अधिकारी की तरह काम करना आवश्यक माना जाता है, इसे नौकरशाही का आदर्श रूप माना जाता है।

प्रश्न 2. आधुनिक राज्य ने राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा का किस प्रकार इस्तेमाल किया?

उत्तर—आधुनिक राज्यों द्वारा राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने में आम जनता यानी नागरिकों का सहारा लिया जाता है क्योंकि उनके द्वारा समाज को शासित करने हेतु, सिद्धांतों का पालन करने हेतु नागरिकों से अपेक्षा की गई, इसलिए विभिन्न सिद्धांतों के साथ समानता का सिद्धांत प्रस्तुत किया गया, जिसके अंतर्गत नागरिकों को समान शिक्षा पाने का अवसर दिया गया। शिक्षा के समरूपीकरण